हिन्दी विभाग

बैनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)

दिनांक
14/09/2020

स्नातक द्वितीय (II)

पत्र संख्या :— 03

* छायावाद शक्ति काव्य का रूप *

उत्तर :– छायावाद महज 'निराला' की संध्या सुन्दरी' और पंत के "चाँदनी रात में नौका विहार" का अलवम भर नहीं है अपितु वह मूल रूप में एक शक्ति काव्य है पुनर्जागरण की चेतना का व्यापक और सूक्ष्म रूप है वह अपनी अर्न्त प्रक्रिया में मानव व्यक्तित्व को गहरे स्तरों पर समृद्ध करता है छायावादी काव्य के प्रतिनिधि कवि जयशंकर प्रसाद की प्रतिनिधि रचना 'कामायनी' में 'देव' और 'असुर' संस्कृतियों से भिन्न एवं उनकी तुलना में अधिक सर्जनात्मक मानवीय संस्कृति के विकास का आख्यान है इसके थके-हारे एवं पराजित मनु के प्रति अपने उद्बोधन का समापन श्रद्धा इन शब्दों में करती है—

शक्ति के विद्युत कण, जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं हो निरुपाय।
समन्वय उनका करे समस्त,
विजयिनी मानवता हो जाय॥

उपर्युक्त पंक्तियों में मूल संदेश शक्ति के नियोजन का है और सन्दर्भ में राष्ट्रीय होते हुए भी चिंता सम्पूर्ण मानवता के विजयिनी बन जाने की है लगभग यही परिस्थितियाँ 'निराला' की राम की शक्तिपूजा नामक कविता में भी है जहाँ शक्ति रावण के पक्ष में उतर आयी है। राम यह जानकर

स्तब्ध एवं हताश है कि—

अन्याय जिधर है, उधर शक्ति, कहते छल-छल
हो गये नयन, कुछ बूँद पुनः छलके दृगजल।

उपर्युक्त पंक्तियों में प्रसाद के 'मनु' तथा निराला के 'राम' की हताश मनोवृत्ति काफी हद तक मिलती जुलती है। प्राणिमात्र के जीवन में कभी न कभी, कहीं न कहीं ऐसी मनः स्थिति आती है किन्तु मनुष्य का साहस और उसकी सर्जन क्षमता उसका अतिक्रमण भी करती है। शायद इसीलिए जाम्बवान राम को शक्ति की मौलिक कल्पना करने की परामर्श देते हुए कहते हैं—

शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो रघुनन्दन॥

उपर्युक्त सम्पूर्ण कविता की रचना दृष्टि 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना' यहीं से आलोकित और प्रवाहित होती है। क्योंकि शक्ति की परिकल्पना अनुकरण से संभव नहीं अपितु शक्ति को सदा मौलिक रूप में ही परिकल्पित किया जा सकता है। सदियों से पराधीनता की जंजीरों में जकड़े हुए भारत को इससे बड़ी और सार्थक दृष्टि कोई समकालीन युग अथवा कविता उतनी प्रदान नहीं कर सकती जितनी छायावादी काव्यधारा ने प्रदान किया। इसी शक्ति पूजन के कारण ही इसे 'शक्तिकाल' की संज्ञा प्रदान किया गया है। 'शक्ति पूजा' के राम यहाँ जितना अपने लिए है उतना ही वे सामूहिक राष्ट्रीय मन के प्रतीक है और उतने ही स्वयं कवि व्यक्तित्व के ~~प्रतीक~~ प्रतीक है।

छायावादी रचनाओं में शक्ति के आह्वान का एक और रूप इस युग के जागरण गीतों में मिलता है। छायावाद काल में लिखे गये इन गीतों में पुनर्जागरण चेतना की बड़ी सूक्ष्म और प्रीतिकर अभिव्यक्ति मिलती है। आलोच्य काल में एक ओर तादात उन प्रभाती एवं जागरण गीतों की है, जिनमें एक ओर शक्ति एवं चेतना का आह्वान किया गया है तो दूसरी ओर समकालीन सन्दर्भ में ये कविताएँ राष्ट्रीय स्वाधीनता के महासागर से जुड़ी हुई हैं।

'बीती विभावरी जाग री', 'अब जागो जीवन के प्रभात' (जयशंकर प्रसाद), 'जागो दिशा ज्ञान' एवं 'जागो फिर एक बार' (सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला), 'प्रथम रश्मि' और 'ज्योति भारत' (सुमित्रानन्दन पंत) एवं महादेवी वर्मा की 'जाग बेसुध जाग' 'चिर जाग तुझको दूर जाना' जैसी नवजागरण और प्रभाती से जुड़ी हुई इन कविताओं में जागरण की वही शक्ति गूंजती है। अन्ततः छायावादी काव्यधारा में राष्ट्रजागरण से अभिन्न समग्र चेतना का जागरण और आह्वान है। इसमें अन्तर्निहित शक्ति के विकास का रचनात्मक और इस अर्थ में छायावाद एक शक्ति काल है।

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो०नं०- 8292271041
ईमेल - benamkumar13@gmail.com

दिनांक
14/09/2020